प्रश्न-2.मराठा शक्ति के पतन के कारणों में से आप किस कारण को अधिक श्रेय देना चाहेंगे और क्यों? **(200 शब्द)**

मॉडल उत्तर

भूमिका में निम्न बातों को शामिल करें-

- मराठा शक्ति पर चर्चा करते हुए बतायें कि मराठों के पास अखिल भारतीय साम्राज्य स्थापित करने की दूरदर्शी नीति व कार्यक्रम का अभाव था।

विषय वस्तु के लिये निम्न बातों पर चर्चा करें-

मराठा शक्ति के पतन के कारणों पर चर्चा कीजिए जिसमें आप निम्न बिंदुओं को शामिल कर सकते हैं-

- मराठा संघ में आपसी फूट, एकता की कमी, परस्पर प्रतिस्पर्धा व लालच ने पतन की ओर ढ़केला।
- चौथ व सरदेशमुखी सौंपने की प्रथा को क्षेत्र विशेष में अपनी व्यक्तिगत शक्ति बढ़ाने में मराठा सरदारों द्वारा उपयोग व इससे जनसामान्य में मराठों के प्रति सम्मान में कमी हुई तथा इनकी छवि लूटेरों की बनी।
- पेशवाओं द्वारा नए इलाकों को जीतकर उनपर कब्जा जमाया गया, पेशवाओं ने वहां प्रशासन की ओर ध्यान नहीं दिया इनकी मुख्य दिलचस्पी राजस्व वसूली में ही रही।
- नई अर्थव्यवस्था विकसित करने का कोई प्रयत्न नहीं किया ताकि मराठा साम्राज्य को आर्थिक सुदृढ़ किया जा सके।
- नई तकनीक, युद्ध व तोपखाना, सैन्य आधुनिकीकरण का अभाव, गुप्तचर व्यवस्था का कारगर न होना। कूटनीतिक दक्षता की कमी आदि पर चर्चा कीजिए।
- मराठों के स्थानीय सहयोगी व मित्र ढूंढ़ने का प्रयास सफल नहीं रहा इससे मजबूत सहयोगी स्तंभ की भांति कार्य कर सकने वाली शक्तियों को अपने पक्ष में न कर सकें। राजपूताना के राज्यों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप किया तथा अवध पर बड़े क्षेत्रीय और मौद्रिक दावे किये।
- पानीपत की हार मराठों के लिए महान विपदा के समान थी। इस युद्ध ने सिद्ध कर दिया कि मराठे गुरिल्ला युद्ध से आगे बढ़कर बड़ी साम्राज्यवादी शक्ति बनने की स्थिति में नहीं थें।
- उदीयमान ब्रिटिश सत्ता का मुकाबला मराठे केवल अपने राज्य को आधुनिक राज्य में रूपांतरित करके ही कर सकते थें मगर ऐसा करने में मराठे असफल रहें।

अंत में संक्षिप्त व संतुलित निष्कर्ष दे।

नोट: प्रश्न संख्या 1 से संबंधित टॉपिक कक्षा में न पढ़ाए जाने के कारण उसको टेस्ट में शामिल नहीं किया गया अत: उसका मॉडल उत्तर भी उपलब्ध नहीं कराया जा रहा है।

प्रश्न-3. फ्रांसीसी शक्ति के समांतर ब्रिटिश शक्ति की सफलता के कारणों का उल्लेख कीजिए।

(200 शब्द)

मॉडल उत्तर

भूमिका में निम्न बातों को शामिल करें-

- ब्रिटिश और फ्रांसीसी दोनों को व्यापारी बताते हुए, इनपर संक्षिप्त चर्चा कीजिए।

विषय वस्तु के लिये निम्न बातों पर चर्चा करें-

- ब्रिटिश कंपनी की स्वायत्तता ने इसे फ्रांसीसी कंपनी पर बढ़त बनाई, उपर्युक्त सामयिक निर्णय लेने में कंपनी सक्षम थी साथ ही कंपनी को जब भी जरूरत पड़ी तो सरकार ने वित्तीय एवं सैनिक स्तर पर भी सहायता उपलब्ध कराई। वहीं दूसरी ओर फ्रांसीसियों को निर्णयन में देर हो जाती थी क्योंकि वे सरकार के नियंत्रण में थें।
- जल शक्ति की सर्वोच्चता ने कंपनी को जहां संकट काल में जलक्षेत्र में सुरक्षित पड़ाव दिया, वहीं अन्य यूरोपीयों को हराने में सहयोग भी दिया। वहीं दूसरी ओर फ्रांसीसी नौसेना ब्रिटिश के मुकाबले कमजोर रही।
- ब्रिटिश कूटनीतिक दक्षता तथा विस्तारवादी नीति एक उद्देश्य की ओर बढ़ रही थी वहीं फ्रासीसियों ने तुलनात्मक रूप से कम दिलचस्पी दिखाई।
- अवसरवादी कूटनीतिक चालें, स्थानीय शासकों से संधि तथा आवश्यकता पड़ने पर संधि के उल्लंघन की नीति भी अपना रहें थें।
- ब्रिटिश कंपनी की आर्थिक सफलता तथा योग्य अधिकारियों का कुशल नेतृत्व मिला। अंग्रेजों के पास क्लाइव, वारेन हेस्टिंग्स, एल्फिंस्टन जैसे उत्तम व कुशल श्रेणी के 'प्रशासनिक नेता' थें। दूसरी तरफ फ्रांसीसियों के पास इसका अभाव रहा।
- ब्रिटिश कंपनी के अधिकारियों व सैनिकों के अनुशासन को प्रमुखता से बताइये। कंपनी अपने सैनिकों के अनुशासन पर अधिक महत्व देती थी तथा उन्हें नियमित रूप से वेतन मिलता था।

अंत में संक्षिप्त व संतुलित निष्कर्ष दे।

नोट: प्रश्न संख्या 1 से संबंधित टॉपिक कक्षा में न पढ़ाए जाने के कारण उसको टेस्ट में शामिल नहीं किया गया अत: उसका मॉडल उत्तर भी उपलब्ध नहीं कराया जा रहा है।

प्रश्न-4. ''वे कौन से कारक थें, जिसने एक व्यापारिक कंपनी की राजनीतिक महत्वकांक्षा को सजग कर दिया।'' आप अपना विचार दीजिए। **(200 शब्द)**

मॉडल उत्तर

भूमिका में निम्न बातों को शामिल करें-

- पतोन्मुख मुगल साम्राज्य व उसके बाद भारत की राजनीतिक शून्यता की चर्चा कीजिए।

विषय वस्तु के लिये निम्न बातों पर चर्चा करें-

- भारत की तत्कालीन राजनीतिक शून्यता को विस्तार से बताइये और जिस मुगल साम्राज्य ने समकालीन विश्व को अपने विस्तृत प्रदेश, विशाल सेना तथा सांस्कृतिक उपलब्धियों से चकाचौंध कर दिया था, अठारवीं शताब्दी के आरंभ में अवनति की ओर जा रहा था, को उल्लेखित कीजिए।
- एक ओर भारतीय राजनीतिक कमजोरी वहीं दूसरी ओर ब्रिटिश कंपनी की कार्य-कुशलता, योग्य नेतृत्व, सैन्य तकनीकी श्रेष्ठता, सैनिकों की श्रेष्ठता, उनका अनुशासन, वफादारी, मजबूत जलशक्ति और भरपूर उत्साह से व्यापार के साथ-साथ राजनीति में दिलचस्पी लेने लगें।
- अंग्रेजों ने भारतीय राजनीतिक शून्यता का लाभ लिया साथ ही अपने समकक्ष यूरोपीय प्रतिद्वंदियों को भी साम्राज्य निर्माण की प्रक्रिया से बाहर कर दिया और एक-एक करके क्षेत्र विजित करने लगें।
- ब्रिटिश कंपनी की व्यापारिक सफलता पर चर्चा कीजिए। तथा इनकी वाणिज्यवादी प्रणाली को बताइये।
- भारतीय नवाबों का बाह्य संसार से संपर्क न होने से अंग्रेजों को व्यापारी मात्र ही समझतें रहें। उन्होंने अंग्रेजों की बढ़ती महत्वकांक्षा व कूटनीतिक चालों तथा भारतीय राजाओं का सहयोग, संधि तथा तटस्थता प्राप्त करने के पीछे के उद्देश्य को नहीं समझा।

अंत में संक्षिप्त व संतुलित निष्कर्ष दे।

नोटः प्रश्न संख्या 1 से संबंधित टॉपिक कक्षा में न पढ़ाए जाने के कारण उसको टेस्ट में शामिल नहीं किया गया अतः उसका मॉडल उत्तर भी उपलब्ध नहीं कराया जा रहा है।